**E-ISSN:** 2706-8927
**P-ISSN:** 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2022; 4(1): 189-193
Received: 15-10-2021
Accepted: 16-11-2021

**डॉ. नीतू मान**
असिस्टेंट प्रोफेसर, बी एड विभाग, आई आई एम् टी, यूनिवर्सिटी, गंगानगर, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

**Corresponding Author:**
**डॉ. नीतू मान**
असिस्टेंट प्रोफेसर, बी एड विभाग, आई आई एम् टी, यूनिवर्सिटी, गंगानगर, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

# संवेदनशील सामाजिक समस्याओं के प्रति आई आई एम टी, यूनिवर्सिटी, के स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन (गंगानगर, मेरठ क्षेत्र के विशेष सन्दर्भ में)

## डॉ. नीतू मान

**सारांश**
निरक्षरता, अज्ञान, निर्धरता, बेरोज़गारी, छुआछूत आदि की समस्याएँ भी हमारे देश की जड़े खोखली कर रही है। वर्तमान समय से विद्यालयों में रैगिंग, परीक्षाओं में नकल, शिक्षण संस्थाओं में दादागिरी भी ज्वलन्त समस्याएँ बन चुकी है। कुर्सीवाद की समस्या हमारी ऐसी समस्या है, जिससे भ्रष्ट राजनीति का जन्म होता है। यह न केवल समाज, अपितु पूरे राष्ट्र को पतन के गर्त में ले जा रही है। समस्याएँ तो अनगिनत हैं, परन्तु उनका समाधान भी हो सकता है यदि हम सभी मिल जुलकर इस दिशा में प्रयत्न करे। हम सभी को इन समस्याओं से मुक्ति पाने के लिए भरसक प्रयत्न करने होगे, जिससे कि समाज का अहित न हो सके। इस तरह कि सामाजिक समस्याएं आये दिन छात्रों के बीच चर्चा का विषय बनती जा रही तथा उनकी अभिवृत्ति का परिमापन भी करती रही हैं प्रस्तुत शोध पत्र इसी विषय पर आधारित है ।

**प्रस्तावना**
भारत एक प्राचीन देश है और कुछ अनुमानों के अनुसार, भारतीय सभ्यता लगभग पाँच हज़ार साल की है। इसलिए, यह स्वाभाविक है कि इसका समाज भी बहुत पुराना और जटिल होगा। इसलिए, भारतीय समाज विविध संस्कृतियों, लोगों, विश्वासों और भाषाओं का एक जटिल मिश्रण है जो कि कहीं से भी आया हो, लेकिन अब इस विशाल देश का एक हिस्सा है। यह जटिलता और समृद्धि भारतीय समाज को एक बहुत जीवंत और रंगीन सांस्कृतिक देश बनाता है। हमारे भारत देश में आज भी बहुत सी ऐसी समस्याएं हैं जो भारत के विकास में वाधा बनी हुई हैं। इनमें से कुछ मुख्य है गरीबी, जनसंख्या, प्रदूषण, निरक्षरता, भ्रष्टाचार, असमानता, लैंगिक भेदभाव, आतंकवाद, सांप्रदायिकता, बेरोजगारी, क्षेत्रवाद, जातिवाद, शराब, नशाखोरी, महिलाओं के खिलाफ हिंसा प्रमुख हैं।
भारतीय समाज को कई मुद्दों के साथ जोड़ दिया जाता है जो सामाजिक समस्याओं का रूप ले लेती हैं । फुल्लर और मेयर्स के अनुसार "जब समाज के अधिकाँश सदस्य किसी विशिष्ट दशा एवं व्यवहार प्रतिमानों को अवांछित आपत्तिजनक मान लेते हैं तब उसे सामजिक समस्या कहा जाता है। एक सामाजिक समस्या, सामान्य रूप से, ऐसी स्थिति है जो एक समाज के संतुलन को बाधित करती है। अगर हम मानव समाज के इतिहास पर दृष्टि डाले तो यह विभिन्न तरह की समस्याओं और चुनौतियों का इतिहास रहा है।

समाज चाहे शिक्षित ही क्यों न हो, सभ्य ही क्यों न हो, समस्याएं हर जगह व्याप्त हैं। यही समस्याएं सामाजिक विघटन का कारण हैं। आज हमारे समाज में जो सामाजिक बुराईयां व्याप्त हैं, उन्हें शायद ही कभी सूचीबद्ध किया जा सके। उनमें से प्रमुख हैं- किशोर अपराधी, बाल शोषण, धोखा, ड्रग पेडलिंग, मुद्रा तस्करी, घूसखोरी और भ्रष्टाचार, सार्वजनिक निधियों का गबन, छात्र और युवा अशांति, सांस्कृतिक हिंसा, धार्मिक असहिष्णुता, सीमा विवाद, बेईमानी, चुनाव में धांधली, कर्तव्य के प्रति कमिटमेंट न देना, परीक्षा में गड़बड़ी, अनुशासनहीनता, अन्य प्रजातियों के लिए अनादर, सकल आर्थिक असमानता, गरीबी, बीमारी और भूख, व्यापक अशिक्षा, रोजगार के अवसरों की कमी, अन्याय, अधिकार का दुरुपयोग, आवश्यक वस्तुओं की जमाखोरी, जनता का शोषण, भेदभाव और जातीय भाषावाद, जानवरों के साथ दुर्व्यवहारमानव क्षमता की कमी, गृह युद्ध, सूखा, मानव तस्करी और बाल श्रम आदि।

2013 के लिए भारत का मानव विकास सूचकांक (भ्क्) रैंक दुनिया के 187 देशों में से 135 है जो रिपोर्ट में सूचीबद्ध हैं। इससे यह पता चलता है कि एक समाज के रूप में हम अभी भी एक नकारात्मक अर्थ में रूढ़िवादी मान्यताओं के लोग हैं जो सभी की समानता और भाईचारे की अवधारणा में विश्वास नहीं करना चाहते हैं।

हालांकि कई सरकारी और गैर-सरकारी (NGO) सामाजिक क्षेत्रों में मौजूदा स्थिति को सुधारने की दिशा में काम कर रहे हैं, लेकिन परिणाम अभी बहुत अच्छा नहीं हैं। उदाहरण के लिए: कन्या भ्रूण हत्या का मुद्दा हमारे देश की शर्मनाक प्रथाओं में से एक है। हालाँकि सरकार और गैर-सरकारी संगठनों ने कई तरह के निषेधात्मक उपाय किए हैं, लेकिन अभ्यास जारी है।इसका वास्तविक कारण हमारे देश के समाज की पितृसत्तात्मक व्यवस्था है जो पुरुष को श्रेष्ठ अधिकारी और महिलाओं को उनके अधीनस्थ मानती है। इस प्रकार, यह विश्वास प्रणाली या लोगों की सांस्कृतिक कंडीशनिंग है जो समाज को तेज गति से बदलने की अनुमति नहीं दे रही है।

हालाँकि समाज में कई सकारात्मक परिवर्तन भी हुए हैं, जैसे कि अब लड़कियां भी बड़ी संख्या में स्कूल जा रही हैं और उनका रोजगार अनुपात भी बढ़ रहा हैय पूरी तरह से निरक्षरता कम हो रही हैय एससी ६ एसटी की स्थिति में भी सुधार हो रहा है, लेकिन स्थिति संतोषजनक नहीं है। हम अपने घरों में महिलाओं के खिलाफ असमानता देखते हैं, महिलाओं के खिलाफ यौन हिंसा दैनिक आधार पर सुनी जा सकती है, कन्या भ्रूण हत्या जारी है, धार्मिक-सांप्रदायिक हिंसा बढ़ रही है, अस्पृश्यता अभी भी एक वास्तविकता है, बाल श्रम व्यापक रूप से प्रचलित है।

## उद्देश्य

1. संवेदनशील सामाजिक समस्याओं के प्रति कला स्तर के छात्र-छात्राओं की अभिवृत्तियों का अध्ययन करना ।
2. संवेदनशील सामाजिक समस्याओं के प्रति विज्ञान स्तर के छात्र-छात्राओं की अभिवृत्तियों का अध्ययन करना।

## परिकल्पना

इस अध्ययन के लिए निम्न 3 शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है:

- संवेदनशील सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में शिक्षा के प्रति कला स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- संवेदनशील सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में शिक्षा के प्रति विज्ञान स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।
- संवेदनशील सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में शिक्षा के प्रति कला एवं विज्ञान स्तर के छात्रों की अभिवृत्तियों में सार्थक अंतर नहीं होता है ।

## शोध अधिकल्प

अध्ययन में संपूर्ण जनसंख्या को सम्मिलित किया जाना संभव नहीं है । अतः न्यादर्श का चयन कर उसे शोध प्रक्रिया में समाहित किया गया है । प्रस्तुत अध्ययन में "सर्वेक्षण अनुसंधान विधि" का प्रयोग किया गया है ।

## न्यादर्श का आकार

प्रस्तुत अध्ययन में मेरठ जिले के गंगानगर क्षेत्र के आई, आई, एम, टी, यूनिवर्सिटी से कुल 300 छात्र छात्राओं - कला, विज्ञान स्नातक, स्तर के 75-75 छात्र छात्राओं का चयन किया गया है । निम्न तालिका के द्वारा चुने गये याच्छिक विधि से न्यादर्श दर्शाये गये है

**तालिका 1:** आई, आई, एम, टी, यूनिवर्सिटी के छात्र छात्राओं का न्यादर्श रूप में संख्यात्मक विवरण

| कला स्तर | | कुल | विज्ञान स्तर | | कुल |
|---|---|---|---|---|---|
| छात्र | छात्राएं | | छात्र | छात्राएं | |
| 75 | 75 | 150 | 75 | 75 | 150 |

## अध्ययन की सीमायें

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नांकित सीमाएं निर्धारित की गई है ।

1. प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत मेरठ जिले के गंगानगर क्षेत्र के आई, आई, एम, टी, यूनिवर्सिटी का चयन किया गया है।
2. स्नातक स्तर के कला, विज्ञान के छात्र-छात्राओं को सम्मिलित किया गया है ।

## उपकरण

आंकड़े संकलन के लिए स्व-निर्मित प्रश्नावली का निर्माण कर उसके माध्यम से संवेदनशील सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में छात्र-छात्राओं से उनकी अभिवृत्ति जानने का प्रयास किया गया है ।

**तालिका 2:** छात्र-छात्राओं की अभिवृत्तियों से संबंधित सारणी

| क्र सं. | वर्ग | लिंग | मध्यमान | प्रामाणिक विचरण |
|---|---|---|---|---|
| 1 | कला स्नातक | छात्रायें | 190.87 | 14.15 |
| 2 | विज्ञान स्नातक | छात्रायें | 191.0 | 16.73 |
| 3 | कला स्नातक | छात्र | 176.73 | 13.60 |
| 4 | विज्ञान स्नातक | छात्र | 185.93 | 18.12 |

## विश्लेषण व व्याख्या

## परिकल्पनाओं का सत्यापन

**Ho** = संवेदनशील सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में शिक्षा के प्रति कला एवं स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

$$t = \frac{M^1 - M^2}{\sigma_{ed}}$$

$$\sigma_{ed} = \sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_1^2}{N_2}}$$

M1 = 190.87

$\sigma_1$ = 14.15

M2= 176.73

$\sigma_2$ = 13.60

$$t = \frac{190.87 - 176.73}{2.26}$$

$$\sigma_{ed} = \sqrt{\frac{14.15^2}{75} + \frac{13.60^2}{75}}$$

= 6.25

= 2.26

df = (75-1)+(75-1) = 148

148 df के लिये 00.5 सार्थकता स्तर पर टी का प्रामाणिक मान 1.97 होता तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर t का प्रामाणिक मान 2.60 होता है । गणना किया गया t का यह मान 6.25 इन दोनों से अधिक है अतः सार्थक है । अर्थात् यह शून्य परिकल्पना असत्य सिद्ध होती है । अतः संवेदनशील सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में शिक्षा के प्रति कला स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर होता है ।

**Ho** = संवेदनशील सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में शिक्षा के प्रति विज्ञान एवं स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

$$t = \frac{M^1 - M^2}{\sigma_{ed}}$$

$$\sigma_{ed} = \sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_1^2}{N_2}}$$

M1 = 185.93

$\sigma_1$ = 18.12

M2 = 191.00

$\sigma_2$ = 16.73

$$t = \frac{185.93 - 176.73}{2.61}$$

$$\sigma_{ed} = \sqrt{\frac{13.6^2}{75} + \frac{18.12^2}{75}}$$

= 1.78

= 2.84

df = (75-1)+(75-1)=148

148 df के लिये 0.05 सार्थकता स्तर पर 1 का प्रामाणिक मान 1.97 होता है तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर t का मान 2.60 होता है । t का गणनात्मक मान 1.78 इन दोनों से कम है अतः सार्थक नहीं है । अर्थात यह परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है अतः संवेदनशील सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में शिक्षा के प्रति विज्ञान स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर नहीं होता है । विज्ञान स्नातक स्तर के छात्रछात्रायें इन सामाजिक समस्याओं के प्रति कम संवेदनशील होते हैं ।

**Ho =** संवेदनशील सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में शिक्षा के प्रति कला एवं विज्ञान स्तर के छात्रों की अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

148 df के लिये 00.5 सार्थकता स्तर के लिये प्रामाणिक मान 1.97 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर 1 का प्रामाणिक मान 2.60 होता है । t का गणनात्मक मान 3.52 इन दोनों से अधिक है अतः सार्थक है, अर्थात् परिकल्पना असत्य सिद्ध होती है अतः संवेदनशील सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में शिक्षा के प्रति कला एवं विज्ञान स्तर के छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर होता है ।

Ho = संवेदनशील सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में शिक्षा के प्रति कला एवं विज्ञान स्तर के छात्रों की अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

$$t = \frac{M^1 - M^2}{\sigma_{ed}}$$

$$\sigma_{ed} = \sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_1^2}{N_2}}$$

M1 = 176.73

$\sigma_1$ = 13.60 कला छात्रायें

M2 = 185.93

$\sigma_2$ = 18.12 विज्ञान छात्रायें

$$t = \frac{185.93 - 176.73}{2.61}$$

$$\sigma_{ed} = \sqrt{\frac{13.6^2}{75} + \frac{18.12^2}{75}}$$

= 3.52

= 2.61

df = (75-1)+(75-1)=148

148 df पर t का 00.5 सार्थकता स्तर के लिये प्रामाणिक मान 1.97 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर t का प्रामाणिक मान 2.60 होता है | t का गणनात्मक मान 3.52 इन दोनों से अधिक है अतः सार्थक है अर्थात् परिकल्पना असत्य सिद्ध होती है अतः संवेदनशील सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में शिक्षा के प्रति कला एवं विज्ञान स्तर के छात्रों की अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर होता है ।

संवेदनशील सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में शिक्षा के प्रति कला एवं विज्ञान विषयों की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर होता है । सभी छात्रों की सोच एक जैसी नहीं होती है।

## निष्कर्ष

तथ्यों के विश्लेषण एवं व्याख्या के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि आज गरीबी, जनसंख्या, प्रदूषण, निरक्षरता, भ्रष्टाचार, असमानता, लैंगिक भेदभाव, आतंकवाद, सांप्रदायिकता, बेरोजगारी, क्षेत्रवाद, जातिवाद, शराब, नशाखोरी, जैसे सामाजिक समास्याओं जैसे मुद्दे सामने आ रहे है । विज्ञान स्नातक स्तर के छात्र-छात्रायें सामाजिक समस्याओं के प्रति कम संवेदनशील होते है । अतः छात्र छात्राओं का सामाजिक समस्याओं के प्रति संवेदनशील होना अति आवश्यक है । स्थिति में सुधार के लिए बहुत कुछ किए जाने की आवश्यकता है। लोगों के माइंड सेट और सोच को बदले बिना यह बहुत मुश्किल काम है। इस उद्देश्य के लिए लोगों को विभिन्न सामाजिक समस्याओं के बारे में शिक्षित करना और उन्हें अपने सोचने के तरीके को बदलने के प्रति संवेदनशील बनाना सबसे अच्छा तरीका है। क्योंकि खुद को बदलने की कोशिश कर रहे लोगों के बिना, कोई भी सरकारी या गैर-सरकारी प्रयास आधे-अधूरे साबित होंगे। देश को अब सरकार के साथ मिलकर इस तरह की सामाजिक बुराइयों से निपटने के लिए तैयार रहने की जरूरत है। हमारी शिक्षा व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि विज्ञान संकाय हो या कला संकाय या कि अन्य संकाय सभी छात्रों को आरम्भ से ही महिलाओं के प्रति संवेदनशील होने का पाठ पढाया जाना चाहिए । दुनिया की आधी आबादी यानि महिलाएं किसी भी तरह से कमजोर नहीं है । उनके भी अधिकार हैं उन्हें भी समाज में उतना ही सम्मान

मिलना चाहिए जितना पुरुष खुद के लिए चाहते हैं । जब इस तरह की शिक्षा बच्चों को बचपन से ही दी जाएगी तो वे अगर पुरूष हैं तो महिलाओं की इज्जत करेंगे और यदि वे स्वयं महिला हैं तो वे खुद भी अपनी इज्जत करेंगी । इससे एक बड़ा भारी बदलाव आएगा।

## सन्दर्भ


1. पिंटो, एस.पी. । उत्तर कन्नड़ जिले में मानक VII के विद्यार्थियों के बीच शांति जागरूकता विकसित करने में विशेष रूप से डिज़ाइन की गई निर्देशात्मक सामग्री के प्रभाव पर एक अध्ययन, अप्रकाशित पीएच.डी. थीसिस। 2013.
2. सादी, जेडई, होनरमंद, एम.एम., नज़रियन, बी, अहदी, एच, और अस्करी, पी । हाई स्कूल की द्वितीय वर्ष की छात्राओं में आक्रामकता को कम करने पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रशिक्षण के प्रभाव का मूल्यांकन। जर्नल ऑफ अमेरिकन साइंस. 2012;8(5):209-212.
3. सरवोनो, एस.डब्ल्यू. । पेंगंटार साइकोलॉजी उमम। जकार्ता: राजाग्राफिंडो पर्सदा. 2013.
4. स्कॉट ईडब्ल्यू । लचीलापन और अकादमिक तनाव: सामाजिक कार्य के छात्रों के बीच सामाजिक समर्थन का मध्यम प्रभाव, सामाजिक कार्य में प्रगति, वी। 9, नंबर 2। 2008.
5. शर्मा, ए. । वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की सामाजिक तनाव शैक्षणिक तनाव आत्मसम्मान और भावनात्मक परिपक्वता पर योग प्रथाओं का प्रभाव। अप्रकाशित पीएच.डी. थीसिस, 2006.
6. मनोहरलाल, । माध्यमिक स्तर पर छात्रावासियों और गैर-छात्रावासियों के शैक्षणिक तनाव और व्यक्तित्व पैटर्न का तुलनात्मक अध्ययन। श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल तिबरेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझुनू, राजस्थान अप्रकाशित पीएच.डी. थीसिस। 2013.
7. लस्चिंस्की एल।, श्नाबेल के। और श्रोडर-एबे एम। पावर पॉज़िंग के लाभ: प्रभुत्व और सामाजिक संवेदनशीलता पर प्रभाव, सामाजिक मनोविज्ञान में व्यापक परिणाम. 2017;2(1):55-67. डीओआई: 10.1080/23743603.2016.1248080
8. कौल, एल. । शैक्षिक अनुसंधान की पद्धति। नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस लिमिटेड. 1999.
9. टायरेल, जे । मनोविज्ञान के स्नातकों के बीच तनाव के स्रोत, आयरिश जर्नल ऑफ़ साइकोलॉजी, 1992;13:184-192।.